महानगरीय जीवन का वास्तविक चित्रण 'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' के विशेष संदर्भ में

शोध पत्र-हिन्दी

* प्रा. भगवान नारायण जाधव

''परदे पे चमकने भागा है धरों से,
उस रूप को कोठे पे बिठाती है बम्बई
जो दिख रहा है, जैसा वैसा नहीं है वो,
चेहरे पे कई चेरे चढाती है बम्बई
खाना तो फिर भी सस्ता सुलभ है यहॉ,
मगर रहने को आसमान बताती है बम्बई।''

उपर्युक्त गजल में चंद्रसेन विराटजी ने बम्बई महानगर का वास्तविक चित्रण किया है। हमारे देश के चार महानगरों का चंद्रसेनजीने बम्बई के रूप में चित्रण किया है,जो आज की महानगरीय जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। देश की आर्थिक राजधानी, मायानगरी, गरीब, दीन, पीडितों की स्वप्नभूमि, किसी के स्वप्न को आसमान पर चढानेवाली, तो किसी को प्लेटफार्म ही नहीं तो कोठे का सहारा दिलानेवाली, बम्बई है। मायानगरी बम्बई में वह सब दिखाई देगा, जो देश के दूसरे किसी भी महानगर, शहर में देखने को नहीं मिलता। सभी को रोटी-रोजगार दिलाने की क्षमता केवल बम्बई महानगर में होने से, देश के आम आदमी में बम्बई के प्रति अत्यधिक आकर्षण, प्रेम और आदर दिखाई देता है। इसीकारण बम्बई का वर्णन हमें अनेक फिल्म,धारावाहिक के साथ-साथ उपन्यास, कहानी, नाटक आदि साहित्य में भी दिखाई देता है।

आधुनिक काल के चर्चित उपन्यासकार सुरेन्द्र वर्माजीने अपने उपन्यास 'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' की कथावस्तु बम्बई महानगर से ली है। सुरेन्द्र वर्माजीने प्रस्तुत उपन्यास में अनेक समस्याओंका वास्तविक चित्रण किया है, जो तमाम महानगरों की यथार्थ तस्वीर है। बदलती महानगरीय जीवनशैली, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य विघटन, नष्ठ हुयी नैतिकता, आपसी संबधों में हो रहीं दरी, संबधो की औपचारिकता,बढती गुन्हेगारी की समस्या, उन्मुक्त यौन संबधो की समस्या आदि समस्याओं से ग्रस्त महानगरों का बम्बई के रुप में हुआ चित्रण मन को झकझोर देता है। वर्ष 1998 में प्रकाशित उपन्यास 'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' की कथावस्तु के मध्य में सुंदर सुशिक्षित युवक नील और उसके समान हालात से ग्रस्त भोला है। नील दिल्ली विश्वविदयालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर वहीं पर अस्थाई अध्यापक के रुप में नौकरी करता है। नील अत्यधिक सुंदर होने के कारण उनकी ओर अनेक स्त्रियां आकर्षित हाती है। ऐसी स्थिति में उसके ही विभाग अध्यक्ष की भतीजी नील की ओर आकृष्ट हो जाती है। जिसका परिणाम नील को विभागाध्यक्ष द्वारा नौकरी से निकाल दिया जाता है। और दिल्ली के आस-पास कहीं पर भी नौकरी न लगने देने की चुनौति विभागाध्यक्ष से मिलती है। इसीकारण नील दिल्ली छोड़कर समृद्धि से भरे स्वप्ननगरी बम्बई में पहुँचता है। बम्बई आते समय रेल में नील का भोला से परिचय होता है। भोला भी अपने पारिवारिक समस्याओं से हारकर उसे निपटने के लिए बम्बई आता है। बम्बई में आने का उद्‌देश दोनों का एक है। वह है पैसे कमाना। लेकिन पैसा कमाकर अपना जीवन सुधारने के लिए दोनों अलग-अलग मार्ग अपनाते है। भोला अंडरवर्ल्ड की पनाह लेता है तो नील पुरुष वेश्या बनकर पैसा कमाता है। इसी विषय को लेकर उपन्यासकारने बम्बई महानगर की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

बेकार युवा वर्ग का असंतोष :-आज विश्व में सबसे अधिक युवक भारत में है। भारत देश युवकों का देश माना जा रहा है। लेकिन यहीं युवक आज बेकारी के कारण असंतोष का सामना कर रहें है। उपन्यास में नीहित प्रमुख समस्याओं में महत्वपूर्ण समस्या है, बेकार युवाओ का असंतोष। बढते असंतोष का मूल कारण है बेकारी। कारण युवकोंकी संख्या की तुलना में रोजगार की कमी, नौकरियों की कमी है। कारणवश युवा वर्ग दिन पर दिन असंतोषी बन रहा है। परिणाम स्वरूप युवा पैसे कमाने के लिए दुष्कर्म भी करने में आगे पीछे नहीं देख रहें है। किसी भी रास्ते को अपनाकर युवक जीवन की नौका पार करते नजर आते है।

प्रस्तुत उपन्यास में भी ऐसे दो युवकों की अवस्था दिखाई देती है। जिसमें भोला आर्थिक विषमता और पारिवारिक समस्या के कारण असंतुष्ट होकर अंडरवर्ल्ड की दुनिया में काम करता है। आज ऐसे अनेक भोला है जो परिस्थिति पर मात करने के लिए गैरमार्ग का अवलंब कर रहें है। विद्‌वानोंका मानना है कि, आतंकवादी बनने के पीछे प्रमुख कारणों में से एक 'युवा वर्ग का किसी न किसी कारणों का असंतोषी होना है।' भोला से काका द्वारा घर से बाहर कर देना उसमें असंतोष निर्माण होने का कारण है।

भोला के जीवन की कहानी उपन्यासकार बताते है- ''पिता के देहान्त के बाद काका अकेले खेतीबाडी संभालने लगे। भोला मथुरा की हेयर आयल फैक्टरी में चौकीदारी कर रहा था। फिर मॉ बहन को भी साथ ले आया। इसबार हर बार की तरह फसल की कटाई के बाद हिस्सा लेने आया तो उसे घर भी घुसने नहीं दिया।'' ऐसी अनेक परिस्थिति से गॉव के ही नही तो महानगरों के भी युवा असंतोषी बन रहें है। भोला के सम्मान सुंदर, सुशिक्षित नील भी परिस्थिति से असंतोषी होकर, मजबूर होकर

*हिन्दी विभागाध्यक्ष, वि.पा.शि.प्र.मं. संचलित, कला व विज्ञान महाविद्यालय, कन्नड, औरंगाबाद

पुरूष वेश्या बनता है। अर्थार्जन के लिए अनेक लोगों का प्रलोभन भी तब अच्छा मार्गदर्शन लगता है। उपन्यास में घनश्याम नील को कहता है, ''खुबसुरती के साथ-साथ तुम्हारा कुआँरापन भी तो एक गुण है। कमाई के लिए रोड की कोई लड़की रिझ गई तो फिर जिन्दगी भर कुछ करने की आवश्यकता नहीं । घर जमाई बनकर पलंग पर लेटे रहोंगे।'' इससे स्पष्ट दिखता है कि युवा किसप्रकार असन्तोष से घिर कर गलत काम कर रहें है। आज की युवा पीढ़ि बेकारी की भीषणताओं से त्रस्त है। ऐसी समस्याओं का चित्रण कर उपन्यासकार, युवा वर्ग का असंतोष भविष्य में समाज के लिए कितना हानिकारक होगा इसकी ओर संकेत करते है।

महानगरीय व्यक्तियों के अकेलेपन की समस्या :-अकेलेपन मनुष्य का जीवन तहस-नहस करता है। अकेलेपन की समस्या आज महानगरों की आम समस्या बनी है। बढ़ते औपचारिक संबध, बिघडते पारिवारिक संबध, वृद्धों के प्रति तिरस्कार और अन्य कारणों से आज अकेलेपण की समस्या निर्मित हुयी है। महानगरों में बढ़ी प्लॉट संस्कृति से पड़ोसी की भी पहचान नहीं रही है। साथ ही माता-पिता दोनों नौकरी करने से बच्चों में बचपन से ही अकेलेपन की भावना वृद्धिंगत होती है। पति-पत्नी के आपसी बिघडते संबध अकेलेपन को बढ़ावा देते है। ऐसी अनेक समस्याओं से महानगरों में अकेलेपन की समस्या गहन बनी है। जिसे दूर करने के लिए वें लोग किसी भी उचित, अनुचित मार्ग का अवलंब करने में नहीं डरते। उपन्यास के पात्र श्रीमती दस्तुर, कुमूद तथा और भी कुछ पात्र अकेलेपन की पीढ़ा झेल रहें है। नील को श्रीमती दस्तुर अपने यहाँ इसीलिए रखती है, जिससे उनका अकेलापन दूर हो। उसके एकांत को कम करना, दु:ख का सामना करने के लिए उनमें मनोबल जगाना आदि के लिए दस्तुर अपने पास नील को रखती है। बढ़ते महानगरीय अकेलेपन को दूर करने के लिए व्यक्ति वेश्याओं से भी संबध प्रस्थापित करते है, जिसके कारण अनेक नयी समस्याएं निर्मित होती है। जो समाज के आदर्श संस्कृति, सामाजिक मूल्यों को नष्ट करती है। उपन्यास में नील पुरूष वेश्या के पास आनेवाली लगभग सभी औरतें अकेलेपन की समस्याओं से पीडित है। नील के माध्यम से भी उपन्यासकारने महानगरीय मनुष्य के बढ़ते अकेलेपन की ओर संकेत किया है। बम्बई में कई साल रहकर पुरूषी वेश्या व्यवसाय स्वीकारने के पश्चात भी नील का अकेलापन दूर नहीं होता। इसीलिए वह नैन के साथ विवाह कर अकेलेपन को दूर करना चाहता है। अंत में जब नील को कैद किया जाता है तो उसे कोई छुड़ाने न आना महानगरीय अकेलेपन की ओर ही संकेत है। नील अपने अकेलपन पर सोचते हुए कहता है कि,''तीन दिन पहले मेरी हरी भरी दुनिया थी, पॉवतले जमीन थी, आगे सुनहरा भविष्य था, सुख के सपने थे। अब खालीपन, अकेलापन और अँधेरा।''

महानगरों में बढती गुंडागर्दी :-आज देश के चारों महानगरों की स्थिति देखी जाये तो किसी भी महानगर को सुरक्षित नहीं कहा जा सकता। गुंडागर्दी, माफिया का तो बम्बई में बोलबाला ही है। ऐसे महानगर में आए दिन कुछ न कुछ हिंसक घटनाएँ घटित होती है। बम्बलॉस्ट , गोलिबार से लोग अब उब चुके है। अनेक गँग निर्माण होने के कारण गुंडागर्दी की मात्रा अत्याधिक बढ़ी है। गुंडागर्दी बढ़ने के पीछे अनेक कारण है। प्रस्तुत उपन्यास में बम्बई की बढ़ती हुयी गुंडागर्दी का वास्तविक वर्णन हुआ है।

उपन्यास का प्रमुख पात्र भोला आर्थिक अभाव की पूर्ति हेतु अंडरवर्ल्ड की पनाह लेता है। अंडरवर्ल्ड में काम करनेवाले गुंडे, मवाली की वजह से महानगर की जनता अत्याधिक भयभित हो चुकी है। इनका काम ही लोगों में आतंक फैलाकर लूटमार करना होता है । इससे महानगर की आम जनता अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहीं है। उपन्यास में इन गुंडो द्वारा पीडित परिवार की भीषण अवस्था का चित्रण करते हुए भोला कहता है - ''मै गफुर का भागीदार था जब युनियन नेता को ठिकाने लगाया गया। उसके घर में फाकों की नौबत आयी गई। उसके जोरु ने दो बच्चों के साथ किडे मारने की दवा पीकर दुनिया छोड़ दी। जवान नंनंद भी इस समझोते मे शामील थी पर नसीब की मार वह बच गई। अभी सुना वह रातराणी में नंगे नाच की नौकरी पर लग गई है।'' ऐसे अनेक परिवार महानगर में गुंडो की चपेट में आकर बरबाद हुये है।

महानगरीय जीवन में उन्मुक्त यौन संबध :-आधुनिकता के इस दौर में स्त्री हो या पुरूष वह पूर्णरूप से स्वातंत्र्य की माँग कर रहें हैं। उनका मानना है कि शारिरिक स्वातंत्र्य से ही पूर्ण स्वतंत्र्य प्राप्त होता है। परिणाम स्वरूप महानगरों में अमर्यादित उन्मुक्त यौन संबधो का प्रचलन शुरू हुआ है। उन्मुक्त यौन संबध समाज, संस्कृति और सभ्यता को हानिकारक होकर भी तथाकथित आधुनिकतावादी महानगरीय व्यक्ति इसे अपना रहे है। उन्मुक्त यौन संबधो का परिणाम भीषण होकर भी आयें दिन यह समस्या अपना उग्र स्वरूप धारण कर रहीं है। उपन्यास 'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' में महानगरीय जीवन में बढ़ते उन्मुक्त यौन संबधो का वास्तविक चित्रण हुआ है। महानगर का माहौल ऐसी समस्या पनपने के लिए उपयुक्त है। क्योंकि एक मनुष्य दूसरे से परिचित नहीं है।

उपन्यास का नायक नील बम्बई में उपजीविका हेतु आया है। लेकिन यहाँ की व्यवस्था, यहाँ के स्त्रियों की अत्याधिक कामासक्ती आदि को देखकर वह पुरूष वेश्या बनता है। उपन्यास की अनेक स्त्री पात्र है जिसमें कुमूद, ब्लॉसम, यास्मिन, पारूल,शिल्पा, करूणा आदि उन्मुक्त यौन संबधों का स्वीकार करती है। जो अपनी तन की प्यास को मिटाने के लिए पुरूषों को पैसे देकर उनसे संबध स्थापित करती है। उपन्यास में पारूल नामक स्त्री एक उँचे और सफेदपोष खानदान की होने के बावजूद नील के साथ स्वच्छंद रूप से यौन संबध रखना चाहता है। वह एक जगह कहती है ''मै एक बिस्तर पर रात-भर तुम्हारे बगल में सोना चाहती हूँ। मै देखना चाहती हूँ कि अपने प्रेमी के साथ जागने पर सुबह का उजियाला कैसा होता है।'' उपन्यास में नील के कुमूद, ब्लासम, यास्मीन, शिल्पा, करूणा आदि के साथ घटित यौन संबध उन्मुकता का ही दर्शन कराते है। उपन्यासकारने महानगर में हो रहें उन्मुक्त स्वच्छंद यौन संबध का वास्तविक चित्रण किया है। जो आज महानगर की गहन समस्या बनी हुयी है।

महानगर में पुरूष वैश्यावृत्ति का प्रचलन :-उपन्यास 'सलाम आखिरी' में मधू कांकरियाजीने कलकत्ता महानगर में स्थित स्त्री वेश्याओं का बडा मार्मिक चित्रण किया है। इन उपन्यास के अलावा हिन्दी के अन्य उपन्यासों

में भी स्त्री वेश्याओं को लेकर चर्चा हुयी है। लेकिन महानगरों में आज स्त्री वेश्या के साथ-साथ पुरूष वेश्याओं का भी प्रचलन काफी मात्रा में शुरू हुआ है। पुरूष वेश्या बनने के दो कारण है। एक उस पुरूष की आर्थिक कमजोरी जिसका उदाहरण उपन्यास का नायक नील है। दूसरा कारण महानगरीय स्त्रियों की उन्मुक्त यौनसंबधों की लालसा। अपनी दबी हुयी काम वासना की पूर्ति हेतु महानगरों में कुछ महिलाएं पुरूष वेश्याओं के पास जाती है। घर में शांत न हुयी आग, बाहर आकर बुझेगी ऐसी इनकी कामना होती है। बढ़ते पुरूष वेश्याओं की समस्या उपन्यासकारने चित्रित की है। उपन्यास का नायक नील पुरूष वेश्या बनने का कारण बताता है। ''हम जिस पुंजीवादी समाज में जी रहें है, उसमें हमारे सामने पेट भरने का एक ही रास्ता है अपनी किसी काबीलीयत को बाजार में बेच पाना।'' उपन्यास का नील अडतीस वर्षीय अविवाहिता कुमूद केशवानी से अपनी वेश्या व्यवसाय की सुरूवात कर आगे ब्लॉसम,यास्मीन,शिल्पा, करुणा,पारूल आदि के साथ यौन संबध रखता है।

उपन्यास में पुरूष वेश्या के संदर्भ में और भी जानकारी प्राप्त होती है। उपन्यासकार पुरूष के वेश्या बनने के कारण तथा स्त्रियों के पुरूष वेश्या की ओर आकर्षित होने के कारणों पर विस्तार से चर्चा करते है। नील दिखने में सुंदर होने के कारण उनकी ओर अधिक स्त्रियां आकर्षित होती है। नारी जाती का बड़ा वर्ग उसके शरिर के आक्रमकता की ओर आकर्षित था। स्त्रियों का पुरूष वेश्या की ओर आने के अनेक कारण उपन्यासकारने बतायें है। अडतीस वर्षीय कुमूद अपने अकेलेपन को हटाने के लिए नील की ओर आकर्षित होती है। तो पारूल अपने मर्जी के विरूद्ध विवाह करने के कारण, तथा पति के शीघ्रपतन की बीमारी के कारण नील को अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए तन,मन,धन से तयार रहती है। महानगर के व्यक्ति की चकाचौंध से भरी जिन्दगी भी पुरूष वेश्या व्यवसाय बनने का प्रमुख कारण लगती है। उपन्यास में कुमूद कहती है कि, ''सच्चाई तो यह है कि महानगर में कामकाजी स्त्री-पुरूष के पास वह एकान्त और एकाग्रता कहॉ, जो रती-साधना के लिए अनिवार्य है।'' महानगर के पतियों के पास समय की कमी होने के कारण बहुत स्त्रियां अन्य पुरूष की ओर आकर्षित होती है।

उपर्यूक्त विवेचन के आधारपर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास में सुरेन्द्र वर्माजी ने आज के दोर की भीषण समस्याओं का चित्रण किया है। महानगरों में बढ़ती समस्या एक गहन प्रश्न बना हुआ है। जिससे आदर्श जीवन मूल्यों पर प्रहार हुआ है। सभ्य समाज की निर्मिती के लिए ऐसी समस्याएं को खत्म कर देना चाहिए। उपन्यासकार का उद्‌देश ऐसी समस्याओं का चित्रण कर उसके विरूद्ध प्रचार प्रसार करना लगता है। ऐसी बढ़ती समस्याएं भारतीय संस्कृति और सभ्य जीवन के लिए अत्यंत घातक है। महानगर ही नहीं तो गॉवो मे ंऐसी समस्याएं अपना चेहरा दिखा रहीं है। उपन्यासकारने बम्बई को सामने रखकर आज के महानगर की ज्वलंत समस्याओं का जो चित्रण किया है वह यथार्थ है।